रविवार 25 जुलाई, 2021

विषय — सत्य

स्वर्ण पाठ: भजन संहिता 25 : 10

"जो यहोवा की वाचा और चितौनियों को मानते हैं, उनके लिये उसके सब मार्ग करूणा और सच्चाई हैं॥"

उत्तरदायी अध्ययन: 1 यूहन्ना 5 : 3-6, 20

3 और परमेश्वर का प्रेम यह है, कि हम उस की आज्ञाओं को मानें; और उस की आज्ञाएं कठिन नहीं।
4 क्योंकि जो कुछ परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह संसार पर जय प्राप्त करता है, और वह विजय
जिस से संसार पर जय प्राप्त होती है हमारा विश्वास है।
5 संसार पर जय पाने वाला कौन है केवल वह जिस का यह विश्वास है, कि यीशु, परमेश्वर का पुत्र
है।
6 यही है वह, जो पानी और लोहू के द्वारा आया था; अर्थात यीशु मसीह: वह न केवल पानी के
द्वारा, वरन पानी और लोहू दोनों के द्वारा आया था। और जो गवाही देता है, वह आत्मा है; क्योंकि
आत्मा सत्य है।
20 और यह भी जानते हैं, कि परमेश्वर का पुत्र आ गया है और उस ने हमें समझ दी है, कि हम उस
सच्चे को पहचानें, और हम उस में जो सत्य है, अर्थात उसके पुत्र यीशु मसीह में रहते हैं: सच्चा
परमेश्वर और अनन्त जीवन यही है।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. व्यवस्थाविवरण 32 : 1-4

1 हेआकाश, कान लगा, कि मैं बोलूं; और हे पृथ्वी, मेरे मुंह की बातें सुन॥
2 मेरा उपदेश मेंह की नाईं बरसेगा और मेरी बातें ओस की नाईं टपकेंगी, जैसे कि हरी घास पर झीसी, और
पौधों पर झडिय़ां॥
3 मैं तो यहोवा नाम का प्रचार करूंगा। तुम अपने परमेश्वर की महिमा को मानो!

4 वह चट्टान है, उसका काम खरा है; और उसकी सारी गति न्याय की है। वह सच्चा ईश्वर है, उस में
कुटिलता नहीं, वह धर्मी और सीधा है॥

2. यशायाह 28 : 16, 17

16 इसलिये प्रभु यहोवा यों कहता है, देखो, मैं ने सिय्योन में नेव का पत्थर रखा है, एक परखा हुआ पत्थर,
कोने का अनमोल और अति दृढ़ नेव के योग्य पत्थर: और जो कोई विश्वास रखे वह उतावली न करेगा।
17 और मैं न्याय को डोरी और धर्म को साहुल ठहराऊंगा; और तुम्हारा झूठ का शरणस्थान ओलों से बह
जाएगा, और तुम्हारे छिपने का स्थान जल से डूब जाएगा।

3. नीतिवचन 12 : 19

19 सच्चाई सदा बनी रहेगी, परन्तु झूठ पल ही भर का होता है।

4. यूहन्ना 1 : 6-8, 14, 16, 17

6 एक मनुष्य परमेश्वर की ओर से आ उपस्थित हुआ जिस का नाम यूहन्ना था।
7 यह गवाही देने आया, कि ज्योति की गवाही दे, ताकि सब उसके द्वारा विश्वास लाएं।
8 वह आप तो वह ज्योति न था, परन्तु उस ज्योति की गवाही देने के लिये आया था।
14 और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हम
ने उस की ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा।
16 क्योंकि उस की परिपूर्णता से हम सब ने प्राप्त किया अर्थात अनुग्रह पर अनुग्रह।
17 इसलिये कि व्यवस्था तो मूसा के द्वारा दी गई; परन्तु अनुग्रह, और सच्चाई यीशु मसीह के द्वारा पहुंची।

5. मरकुस 5 : 25-30, 32-34

25 और एक स्त्री, जिस को बारह वर्ष से लोहू बहने का रोग था।
26 ...जिस ने बहुत वैद्यों से बड़ा दुख उठाया और अपना सब माल व्यय करने पर भी कुछ लाभ न उठाया
था, परन्तु और भी रोगी हो गई थी।
27 यीशु की चर्चा सुनकर, भीड़ में उसके पीछे से आई, और उसके वस्त्र को छू लिया।
28 क्योंकि वह कहती थी, यदि मैं उसके वस्त्र ही को छू लूंगी, तो चंगी हो जाऊंगी।
29 और तुरन्त उसका लोहू बहना बन्द हो गया; और उस ने अपनी देह में जान लिया, कि मैं उस बीमारी से
अच्छी हो गई।
30 यीशु ने तुरन्त अपने में जान लिया, कि मुझ में से सामर्थ निकली है, और भीड़ में पीछे फिरकर पूछा; मेरा
वस्त्र किस ने छूआ?
32 तब उस ने उसे देखने के लिये जिस ने यह काम किया था, चारों ओर दृष्टि की।

33 तब वह स्त्री यह जानकर, कि मेरी कैसी भलाई हुई है, डरती और कांपती हुई आई, और उसके पांवों पर गिरकर, उस से सब हाल सच सच कह दिया।
34 उस ने उस से कहा; पुत्री तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है: कुशल से जा, और अपनी इस बीमारी से बची रह॥

6. मत्ती 5 : 1, 2, 6, 17

1 वह इस भीड़ को देखकर, पहाड़ पर चढ़ गया; और जब बैठ गया तो उसके चेले उसके पास आए।
2 और वह अपना मुंह खोलकर उन्हें यह उपदेश देने लगा,
6 धन्य हैं वे जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किये जाएंगे।
17 यह न समझो, कि मैं व्यवस्था था भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों को लोप करने आया हूं।

7. मत्ती 7 : 24-27

24 इसलिये जो कोई मेरी ये बातें सुनकर उन्हें मानता है वह उस बुद्धिमान मनुष्य की नाईं ठहरेगा जिस ने अपना घर चट्टान पर बनाया।
25 और मेंह बरसा और बाढ़ें आईं, और आन्धियां चलीं, और उस घर पर टक्करें लगीं, परन्तु वह नहीं गिरा, क्योंकि उस की नेव चट्टान पर डाली गई थी।
26 परन्तु जो कोई मेरी ये बातें सुनता है और उन पर नहीं चलता वह उस निर्बुद्धि मनुष्य की नाईं ठहरेगा जिस ने अपना घर बालू पर बनाया।
27 और मेंह बरसा, और बाढ़ें आईं, और आन्धियां चलीं, और उस घर पर टक्करें लगीं और वह गिरकर सत्यानाश हो गया॥

8. इब्रानियों 4 : 12

12 क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित, और प्रबल, और हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है, और जीव, और आत्मा को, और गांठ गांठ, और गूदे गूदे को अलग करके, वार पार छेदता है; और मन की भावनाओं और विचारों को जांचता है।

9. मत्ती 16 : 13-18

13 यीशु कैसरिया फिलिप्पी के देश में आकर अपने चेलों से पूछने लगा, कि लोग मनुष्य के पुत्र को क्या कहते हैं?
14 उन्होंने कहा, कितने तो यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला कहते हैं और कितने एलिय्याह, और कितने यिर्मयाह या भविष्यद्वक्ताओं में से कोई एक कहते हैं।
15 उस ने उन से कहा; परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो?
16 शमौन पतरस ने उत्तर दिया, कि तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है।

17 यीशु ने उस को उत्तर दिया, कि हे शमौन योना के पुत्र, तू धन्य है; क्योंकि मांस और लोहू ने नहीं, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर प्रगट की है।
18 और मैं भी तुझ से कहता हूं, कि तू पतरस है; और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा: और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।

10. यूहन्ना 8 : 12-16, 31, 32

12 तब यीशु ने फिर लोगों से कहा, जगत की ज्योति मैं हूं; जो मेरे पीछे हो लेगा, वह अन्धकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा।
13 फरीसियों ने उस से कहा; तू अपनी गवाही आप देता है; तेरी गवाही ठीक नहीं।
14 यीशु ने उन को उत्तर दिया; कि यदि मैं अपनी गवाही आप देता हूं, तौभी मेरी गवाही ठीक है, क्योंकि मैं जानता हूं, कि मैं कहां से आया हूं और कहां को जाता हूं परन्तु तुम नहीं जानते कि मैं कहां से आता हूं या कहां को जाता हूं।
15 तुम शरीर के अनुसार न्याय करते हो; मैं किसी का न्याय नहीं करता।
16 और यदि मैं न्याय करूं भी, तो मेरा न्याय सच्चा है; क्योंकि मैं अकेला नहीं, परन्तु मैं हूं, और पिता है जिस ने मुझे भेजा।
31 तब यीशु ने उन यहूदियों से जिन्हों ने उन की प्रतीति की थी, कहा, यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे।
32 और सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 7 : 13-21

विचारकों का समय आ गया है। सत्य, सिद्धांतों और समय-सम्मानित प्रणालियों से स्वतंत्र, मानवता के द्वार पर दस्तक देता है। अतीत के साथ संतोष और भौतिकवाद की ठंडी परम्परा के बीच टकराव कम हो रहा है। भगवान की अज्ञानता अब विश्वास के रास्ते का पत्थर नहीं है। आज्ञाकारिता का एकमात्र ज़मानता उसी की एक सही आशंका है जिसे जानने के लिए जीवन अनन्त है। यद्यपि साम्राज्य गिरते हैं, "प्रभु हमेशा के लिए शासन करेंगे।"

2. 254 : 10-12

जब हम धैर्यपूर्वक ईश्वर की प्रतीक्षा करते हैं और सत्य की तलाश करते हैं, तो वह हमारे मार्ग का निर्देशन करता है।

3. 224 : 28-31

सत्य स्वतंत्रता के तत्वों को लाता है। इसके बैनर पर आत्मा से प्रेरित आदर्श वाक्य है, "गुलामी को समाप्त कर दिया गया है।" भगवान की शक्ति कैद में उद्धार लाता है। कोई भी शक्ति दिव्य प्रेम का सामना नहीं कर सकती।

4. 136 : 1-2, 29-11

यीशु ने अपने चर्च की स्थापना की और मसीह-उपचार की आध्यात्मिक नींव पर अपने मिशन को बनाए रखा।

शिष्यों ने अपने गुरु को दूसरों की तुलना में बेहतर समझा; परन्तु जो कुछ उस ने कहा और किया, वे सब न समझ पाए, वा उस से बार-बार प्रश्न न करते। यीशु ने धीरज धरने की सच्चाई सिखाने और उसका प्रदर्शन करने में धीरज से काम लिया। उनके छात्रों ने देखा कि सत्य की यह शक्ति बीमारों को चंगा करती है, बुराई को निकालती है, मृतकों को उठाती है; लेकिन इस अद्भुत कार्य का परम आध्यात्मिक रूप से विवेकाधीन नहीं था, यहां तक कि उनके द्वारा, क्रूस पर चढ़ाने के बाद तक, जब उनका बेदाग शिक्षक उनके सामने खड़ा था, बीमारी, पाप, बीमारी, मृत्यु और कब्र पर विजेता।

समझने की इच्छा से, मास्टर ने दोहराया, "परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो?" इस नए प्रश्न का मतलब था: वह कौन है या क्या है जो काम करने में सक्षम है, इसलिए लोकप्रिय दिमाग के लिए रहस्यमय?

5. 137 : 16-11

अपनी सामान्य अभिरुचि के साथ, साइमन ने अपने भाइयों के लिए उत्तर दिया, और उनके उत्तर ने एक महान तथ्य को सामने रखा: "कि तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है।" मतलब मसीहा वही है जिसे आपने घोषित किया है, - मसीह, ईश्वर की आत्मा, सत्य, जीवन और प्रेम की, जो मानसिक रूप से ठीक करता है। इस दावे से यीशु के प्रति समर्पण का आभास हुआ, “हे शमौन योना के पुत्र, तू धन्य है; क्योंकि मांस और लोहू ने नहीं, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर प्रगट की है।” मतलब, प्रेम ने तुम्हें जीवन का मार्ग दिखाया है!

इससे पहले तेजतर्रार शिष्य को केवल उनके सामान्य नामों से ही पुकारा जाता था, साइमन बार-जोना, या जोना का पुत्र; परन्तु अब स्वामी ने उसे इन शब्दों में आत्मिक नाम दिया: "और मैं भी तुझ से कहता हूं, कि तू पतरस है [ग्रीक शब्द पेट्रोस, या पत्थर का अर्थ]; और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा: और अधोलोक [यातना, पाताल लोक, या कब्र] के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।" दूसरे शब्दों में, यीशु ने अपने समाज की स्थापना का उद्देश्य व्यक्तिगत पतरस पर नश्वर के रूप में नहीं, बल्कि उस ईश्वर-शक्ति पर आधारित था जो पतरस के सच्चे मसीहा के स्वीकारोक्ति के पीछे थी।

अब पतरस को यह स्पष्ट हो गया था कि ईश्वरीय जीवन, सत्य और प्रेम, न कि मानव व्यक्तित्व, बीमारों और चट्टान को चंगा करने वाला था, जो सद्भाव के क्षेत्र में एक मजबूत नींव था। इस आध्यात्मिक रूप से वैज्ञानिक आधार पर यीशु ने अपने इलाज के बारे में बताया, जो बाहरी लोगों के लिए चमत्कारी था।

6. 380 : 5-7, 19-21

सत्य युगों की चट्टान है, कोने का पत्थर है, ''परंतु जिस पर वह गिरेगा, उसे वह पीस डालेगा॥''

सत्य की शक्ति के अलावा कुछ भी नहीं त्रुटि के भय को रोक सकता है, और त्रुटि पर मनुष्य के प्रभुत्व को साबित कर सकता है।

7. 269 : 21-28

भौतिक इंद्रियों की गवाही न तो पूर्ण है और न ही दिव्य है। इसलिए मैं अपने आप को यीशु के उपदेशों पर, भविष्यद्वक्ताओं के, और मन के विज्ञान की गवाही पर अनारक्षित रूप से रोपित करता हूं। अन्य नींव वहाँ कोई नहीं हैं। अन्य सभी प्रणालियाँ - सिस्टम पूर्ण रूप से या आंशिक रूप से ज्ञान के आधार पर भौतिक इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त की जाती हैं - हवा से हिलती हुई चट्टानें हैं, न कि चट्टान पर बने मकान।

8. 542 : 7-13

सत्य पाप को धोखा देने का कारण बनता है, और त्रुटि को जानवर के निशान पर सेट करता है। यहां तक कि अपराध को छुड़ाने के लिए या उसे छुपाने के लिए सजा दी जाती है। न्याय से बचना और सच्चाई को नकारना पाप को खत्म करने, अपराध को खत्म करने, आत्म-नियंत्रण को खतरे में डालने और ईश्वरीय दया का मजाक उड़ाने के लिए है।

9. 368 : 2-19

विज्ञान से प्रेरित विश्वास इस तथ्य में निहित है कि सत्य वास्तविक है और त्रुटि असत्य है। सत्य से पहले त्रुटि कायरता है। दिव्य विज्ञान जोर देकर कहता है कि समय यह सब साबित करेगा। सत्य और त्रुटि दोनों नश्वरता की आशंका से पहले से कहीं अधिक निकट आ गए हैं, और सत्य अभी भी स्पष्ट हो जाएगा क्योंकि त्रुटि स्वयं नष्ट हो गई है।

घातक विश्वासों के खिलाफ कि त्रुटि सत्य के समान वास्तविक है, कि बुराई श्रेष्ठ नहीं तो अच्छाई की शक्ति के बराबर है, और यह विवाद सद्भाव के समान सामान्य है, यहां तक कि बीमारी और पाप के बंधन से मुक्ति की आशा भी तंत्रिका को बहुत कम प्रेरणा देती है प्रयास जब हम त्रुटि में होने की तुलना में अधिक विश्वास करते हैं, तो हम आत्मा में अधिक विश्वास रखते हैं, बात करने की तुलना में अधिक विश्वास करते हैं, मरने की तुलना में जीने में अधिक विश्वास करते हैं, मनुष्य की तुलना में भगवान में अधिक विश्वास करते हैं, तब कोई भी भौतिक दमन हमें बीमार होने और त्रुटि को नष्ट करने से नहीं रोक सकता

10. 191 : 8-15

एक सामग्री के रूप में, सैद्धांतिक जीवन-आधार को अस्तित्व की गलत धारणा के रूप में पाया जाता है, मनुष्य का आध्यात्मिक और दिव्य सिद्धांत मानव विचार पर आधारित होता है, और इसे "जहां युवा बच्चा था," की ओर ले जाता है - यहां तक कि एक नए जन्म के लिए भी पुराना विचार, जीवन के आध्यात्मिक बोध और जिसमें जीवन शामिल है। इस प्रकार पूरी पृथ्वी सत्य के प्रकाश के पंखों पर, त्रुटि के अंधेरे का पीछा करते हुए बदल जाएगी।

11. 225 : 5-13

आप जान सकते हैं कि पहला सत्य अपने अनुयायियों की पवित्रता और ईमानदारी से कब आगे बढ़ता है। इस प्रकार यह है कि समय की स्वतंत्रता के बैनर पर मार्च का आयोजन होता है। इस दुनिया की शक्तियाँ लड़ेंगी, और अपने प्रहरी को आज्ञा देंगी कि जब तक वह अपने सिस्टम की सदस्यता न ले, तब तक सच्चाई को पहरा न दें; लेकिन नुकीले चाकू की ओर ध्यान न देकर विज्ञान मार्च करता है। हमेशा कुछ खटपट होती है, लेकिन सच्चाई के मानक के लिए एक रैली है।

12. 450 : 15-26

कुछ लोग धीरे-धीरे सत्य के स्पर्श में आ जाते हैं। संघर्ष के बिना कुछ उपज, और बहुत से लोग यह मानने से हिचकते हैं कि उन्होंने उपज दी है; लेकिन जब तक यह स्वीकार नहीं किया जाता है, बुराई अच्छाई से ऊपर अपने आप को घमण्ड करेगी। क्रिश्चियन साइंटिस्ट ने बुराई, बीमारी और मृत्यु को कम करने के लिए सूचीबद्ध किया है; और वह उनकी नीयत और भगवान की भलाई या अच्छेपन को समझकर उन्हें दूर करेगा। उसके प्रति बीमार होना किसी पाप से कम नहीं है, और वह उन दोनों को ईश्वर की शक्ति को समझकर उन्हें ठीक करता है क्रिश्चियन साइंटिस्ट जानते हैं कि वे विश्वास की त्रुटियां हैं, जो सत्य को नष्ट कर सकता है।

13. 380 : 4 *केवल*

सत्य हमेशा विजयी होता है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6